Adaptation Teaching Methods
अनुकूलन शिक्षण विधियां

परिचय :- बाधित बालकों के प्रत्येक विषय में अधिगम संबंधी समस्याओं को पहचान करके उसकी रोकथाम करने हेतु हमें उचित प्रयास करनी चाहिए जिसके लिए उन्हें उचित स्थान एवं उचित वातावरण की व्यवस्था की जानी चाहिए। जैसे किसी बालक को ध्वनि विभेद करने में कठिनाई होती है, तो उन्हें अक्षरों से संबंधित 2-3 अभ्यास अध्यापक द्वारा बालक कराया जाना चाहिए ताकि बालक को संसाधन युक्त अध्यापक एवं अध्ययन की सुविधा मिल सके। संसाधित अध्यापक बालक की पढ़ने संबंधी त्रुटियुक्त विधि को सुधारने में सहायता करता है।

इसी प्रकार अध्यापक बाधित बालकों की विभिन्न क्षेत्रों में कठिनाईयों को पहचान सकते हैं। सामान्य शिक्षा संस्थाओं से शिक्षा प्राप्त कर रहे बाधित संस्थाओं में शिक्षण प्राप्त कर रहे बाधित बालकों को उपरोक्त बातों के अनुसार अनुदेशनात्मक सामाग्री तथा विधियों के अनुकूलन की आवश्यकता के लिये अध्यापक को अधिगम संबंधी विधियों तथा उसके भागों के बारे में जानकारी होनी चाहिए जो सामान्य कक्षा में अधिगम को प्रभावित करते हैं। अधिगम एक जटिल प्रक्रिया है, इसको अधिगम संबंधी बिन्दुओं शिक्षण विधियों तथा अधिगम संबंधी वातावरण मुख्य रूप से प्रभावित करता है इनमे दैहिक निपुणता के अधिगम की सामर्थ्य होती है। बाधितों की अधिगम प्रक्रिया परिवर्तनशील है, यह परिवर्तन बाधिता के परिणाम पर निर्भर करता है।

बाधित बालक तथा सामान्य बालक में यह अन्तर होता है कि सामान्य बालक प्राकृतिक विधियों से अधिगम तथा वातावरण की खोज करना प्रारंभ कर देता

है, जबकि बाधित बालक का अधिगम के लिये वातावरण कुछ सीमायें खड़ी कर देता है, अथवा बाधित बालक को वातावरण के कारण कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार ऐसे बालक का अधिगम अनुभव भी अवरुद्ध हो जाता है और उसके बाद वाली शैक्षिक उपलब्धियों पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है। इस प्रकार उसे यह क्षति निरन्तर होती रहती है। यदि अध्यापक को बालकों की शैक्षिक समस्याओं के बारे में जानकारी होती है, तो अध्यापक बालकों का मार्ग-दर्शन कर सकता है तथा बालकों के अनुकूल अनुदेशनात्मक सामग्री तथा अन्य विधियों द्वारा कक्षा में शिक्षा प्राप्त कर रहे बालकों की आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है।

~~अनुकूलन शिक्षा~~ बुनियादी कौशल में सुधार (Improving Basic Skill)

बहुत से अधिगम असमर्थ बच्चे आवश्यक सामाजिक कौशल का प्रयोग करने में अनुचित व्यवहार दिखाते है। उनके कौशल

को विकसित करने के लिए निम्न विधियों प्रयोग की जा सकती हैं-

a. शिक्षण अधिगम असमर्थ बच्चों को बातचीत संबंधी केन्द्रीय विषयवस्तु का वर्णन करके।

b. उनको उपयुक्त शारीरिक भाषा का वर्णन करके

c. विभिन्न प्रकार के संवेगों को वर्णित करने के लिए चित्रों व कहानियों का प्रयोग करके।

d. जिन सामाजिक कौशलों के कारण उन्हें कठिनाई होती है, उनके ऊपर अपने अनुभवों का वर्णन करके।

2. कक्षा व्यवहार में सुधार (Improving classroom Behaviour)

अधिगम असमर्थी बच्चों के लिए स्कूलों में व्यक्तिगत शिक्षक उनकी आवश्यकताओं के अनुसार व योग्यताओं के अनुसार अधिगम कर सकें, इसके लिए मानव निर्मित संसाधनों द्वारा उनमें सुधार व पुनर्संरचना संबंधित प्रयास किये जाने चाहिए। यह अवश्य ही अधिगम असमर्थ

बच्चों में उनकी अक्षमर्थता को बदलने में सहायक होंगे। अध्यापक को भी अपने अध्यापन संबंधी विधियों को गतिशील बनाना चाहिए क्योंकि अधिगम असमर्थ विद्यार्थियों की विशेषताएँ विषमजातीय होती हैं।

विभिन्न प्रकार के शैक्षिक प्रावधानों के अतिरिक्त हमें कुछ सामान्य निर्देशन तकनीकों को भी अधिगम असमर्थी बच्चों के लिए अपनाना चाहिए।

1. अधिगम असमर्थ बालकों को उच्च स्तर के निर्देश दिये जाने चाहिए।

2. चॉक बोर्ड पर किसी भी क्रिया के लिए महत्वपूर्ण पद लिखे जाने चाहिए तथा हर एक पद के लिए वैकल्पिक रंगों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

3. प्रत्ययों को आसानी से समझने के लिए चित्रों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

4. सबसे पहले किसी भी प्रत्यय को सम्पूर्ण से समझायें, जैसे - यदि फूल के विभिन्न भागों को पढ़ाना है तो पहले बच्चो

को फूल दिखायें फिर उसके विभिन्न भागों को दिखायें।

5. ऐसे बच्चों के लिए शिक्षण प्रक्रिया में रटने पर जोर नहीं देना चाहिए।

6. गंभीर रूप से अधिगम असमर्थ बच्चों को विशेष विद्यालयों में रखा जाता है। यहां पर इन्हें अपनी शिक्षण आदतों को सुधारने के लिए भरपूर सुविधाएं, अवसर व प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है। अधिगम संबंधी उचित शिक्षण विधियों और उनके सामाजिक - संवेगात्मक व्यवहार में भी उपयुक्त सुधार किया जाता है। अधिगम असमर्थ बच्चों को सुधार के बाद बन्धन रहित वातावरण में रखना चाहिए।

3. सामाजिक व्यवहार में सुधार (Improving Social Behaviour)

इस प्रकार के बालकों में सोचने - समझने, लिखने तथा व्यक्त करने की शक्ति कम होती है। इसलिये यह आवश्यक है कि सामाजिक वातावरण

ARYAN

उनके अनुरूप हो। इसके लिये उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि आत्म-विश्वास की भावना पैदा हो तथा वे हीनभावना से ग्रस्त न हो उनको उनकी गलती पर डाँटना नहीं चाहिये बल्कि प्यार से समझाना चाहिये।